रिकॉर्ड :– मरना तेरी गली में..... पिताश्री 26/6/64

ओम् शांति। बेहद का बाप बैठकर बेहद के बच्चों को अच्छी–2 जीते जी मरने की प्वाइंट्स सुनाते हैं। बच्चों ने गीत सुना कि जीते जी मरना है। काशी पर बलि चढ़ते हैं। वो तो शरीर को खत्म कर देते हैं और वो कोई ज्ञान वा योग आदि नहीं सीखते। यहाँ तो जीते जी बाप का बनना है ज्ञान सुनने लिए। जीते जी देह सहित सब बंधन छोड़, अपन को आत्मा समझना है। बाप अभी आत्माओं से बात करते हैं। बच्चे अब यह पुरानी दुनिया, पुराना शरीर, सब कुछ मेरे हवाले कर दो। बस, हम तो बाबा के बन गए। तुम जीते जी कह रहे हो हम शिवबाबा के हैं, हम अभी वानप्रस्थी हैं प्रैक्टिकल में। वो वानप्रस्थी घर छोड़ जाकर बैठते हैं। फिर भी इस मृत्युलोक में ही जन्म लेते हैं। अभी बाप समझाते हैं कि तुमको इस मृत्युलोक में जन्म नहीं मिलना है। मृत्युलोक कलियुगी दुनिया मुर्दाबाद, अमरलोक सतयुगी पावन दुनिया जिंदाबाद होती है; इसलिए बाप कहते हैं– जीते जी रहो गृहस्थ व्यवहार में, सिर्फ देह सहित जो कुछ तुम्हारा है उनसे ममत्व मिटा दो। समझो, हम शिवबाबा को देते हैं, सब कुछ शिवबाबा का ही है। फिर बाबा कहते हैं– अच्छा, ट्रस्टी होकर संभालो। समझो, शिवबाबा के भंडारे से हम अपना शरीर निर्वाह करते हैं। अज्ञान काल में भी कहते हैं ना– सब कुछ परमात्मा का ही है, परमात्मा का ही दिया हुआ है, फिर कोई मर जाता था तो रो लेते थे। ये अब बाप कहते हैं, पुराने चीज़ की याद भूल जाओ, एक बाप को याद करो, जो बाप नई दुनिया के लिए नया राज्य–भाग्य देते हैं। घर–गृहस्थ में रहते, समझो सब कुछ शिवबाबा का है। हम बाबा के भंडारे से श्रीमत पर चलते हैं। कहेंगे– बाबा, हम मोटर लेवें। हाँ बच्चे, भल लो। जो बच्चे समझते हैं सब कुछ बाबा का है, तो वो राय पूछते हैं। जीते जी मरना इसको कहा जाता है। भक्तिमार्ग में शिवबाबा के आगे बलि चढ़ते थे; परन्तु यह ज्ञान न था। यह तो प०पि०प० बैठ कर सुनाते हैं। कितना सहज रीत 21 जन्मों के लिए वर्सा देते हैं। बाप कहते हैं, मैं कब आया था यह भी कोई जानते नहीं। कहते भी हैं, क्राइस्ट से 300 वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। अब वो स्वर्ग किसने स्थापन किया? देवी–देवताएँ स्वर्ग में कहाँ से आए? गाते भी हैं, मानुष से देवता किए करत न लागे वार। सो कब? ज़रूर आवेगा कलियुग के अंत और सतयुग आदि के संगम पर। बाप कहते हैं अब तुम बच्चों को मनुष्य से देवता बना रहा हूँ। इतने ढेर पढ़ने आते हैं। इसमें अंधश्रद्धा की तो बात ही नहीं। यह दूसरे सतसंगों माफिक नहीं है। स्वयं बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। बाबा ने समझाया है, भक्तिमार्ग में भी बरोबर दो बाप रहते हैं– एक जिस्म का लौकिक बाप, दूसरा आत्माओं का पारलौकिक बाप। आत्मा उस पारलौकिक बाप को याद करती है– ''ओ गॉड फादर''। सब भिन्न–2 नाम–रूप से पुकारते हैं। लौकिक बाप से द्वापर से लेकर जन्म ब जन्म वर्सा लेते आए हो। ऐसे नहीं कि सतयुग में भी लौकिक बाप का वर्सा लेते आए हो। नहीं। सतयुग में जो लौकिक बाप से वर्सा लेते हैं वो इस समय की यहाँ की कमाई है। यहाँ तुम इतनी कमाई करते हो जो 21 जन्म लिए वर्सा ले लेते हो। सतयुग–त्रेता में वर्सा तुम अभी के पुरुषार्थ से पाते हो। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा पाते हो। बाप ही पतित दुनिया को पावन दुनिया बनाते हैं।

यह लक्ष्य सोप है, जिससे पवित्र बनाते हैं। बाप कहते हैं अपन को अशरीरी समझो। तुम आत्माएँ इन कानों से सुनती हो। तो सतयुग–त्रेता में 21 जन्म का वर्सा अभी पारलौकिक बाप से तुमको मिलता है। फिर द्वापर से लेकर लौकिक बाप से अल्प काल के लिए वर्सा लेते आए हो भिन्न नाम–रूप, देश–काल में। याद सब उस पारलौकिक बाप को करते हैं। आत्मा याद करती है, कहती है– यह मेरा शरीर लौकिक बाप ने रचा है। तो दो बाप हुए ना! अभी तुम बच्चे जानते हो कि तीसरा बाप भी है– प्रजापिता ब्रह्मा। तुम प्रैक्टिकल में ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हो। एक लौकिक बाप, दूसरा पारलौकिक निराकारी बाप, तीसरा फिर यह है साकारी बाप। प्रजापिता ब्रह्मा गाया हुआ है; परन्तु मनुष्य जानते नहीं। समझते हैं, ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतनवासी है। तुम जानते हो, प्रजापिता ब्रह्मा तो साकारी बाप है। अब तुम परलोक जाने लिए तैयारी कर रहे हो। तुम जीते जी सब वानप्रस्थ हो। वाणी से परे जाना है। यह शरीर छोड़ जाना है ज़रूर। मौत सबका होना है। मनुष्य वानप्रस्थ लेते हैं, साधु–संत आदि से मंत्र लेते हैं; परन्तु वो जानते नहीं कि यह शरीर छोड़कर हम स्वीट होम जाएँगे। यह सिर्फ तुम जानते हो। अभी हमको आतरवेला (उतावलापन) होती है– यह पुराना शरीर छोड़, हम आत्मा बाबा की याद में रहने से पावन बन, हम बाबा पास जावेंगे, बाबा से 21 जन्मों लिए वर्सा लेंगे। तो लौकिक बाप भी है, ब्रह्मा बाप भी है, शिवबाबा भी सन्मुख है। तीनों बाप हैं ना बरोबर। इसमें अंधश्रद्धा की तो बात नहीं। वो सतसंग तो द्वापर से चले आए हैं और दुर्गति को पाते रहे हैं। अगर कहें कलियुग अजन 40 हज़ार वर्ष रहेगा, तो पता नहीं कितनी दुर्गति को पावेंगे। भ्रमरी विष्टा के कीड़े बहुत ले आती है, आकर भूँ–2 करती है, फिर उन कीड़ों में जो जात वाले होते हैं वो आप समान बन जाते हैं, बाकी और जात वाले सड़ जाते हैं। यहाँ भी तुम्हारे पास विष्टा के कीड़े बहुत आते हैं। उनमें जो देवी–देवता धर्म वाला होगा, उनको अच्छी रीति समझ में आवेगा, बाकी की बुद्धि में बैठेगा नहीं। वह है भ्रमरी, तुम हो ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ। तुम्हारा धंधा है विषय सागर के विकारी कीड़ों को ले आ भूँ–2 करना कि यह तुम्हारा पारलौकिक बाप है। बाप कहते हैं, मैं आया हूँ तुम बच्चों को वर्सा देने। हम जो भी बी.के. कुमारियाँ हैं, बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हैं, तुम भी लो। अब जाना है निर्वाणधाम, जहाँ से आकर पार्ट बजाया। अब यह बहुत जन्मों के अंत के जन्म का भी अंत है। अभी तुम अमरलोक जाने लिए अमरकथा सुन रहे हो। ज्ञान का सागर एक ही प०पि०प० है। ब्रह्मा ज्ञान सागर, विष्णु ज्ञान सागर वा शंकर ज्ञान सागर कब नहीं कहेंगे। एक शिवबाबा ही ज्ञान सागर है। ज्ञान सूर्य प्रगटा...। बाप कहते हैं– बच्चे, अब यह सारी पुरानी दुनिया कब्रिस्तान होनी है। परिस्तान की स्थापना हो रही है, जिसको स्वर्ग कहते हैं। तो यहाँ तुम आकर जीते जी मरते हो– बाबा, हम आपके हैं। आधा कल्प से तुम बाप का आवाहन करते आए हो। कहते हो– बाबा, हम बहुत धक्के खाते आते हैं। बाबा कहते हैं, यह ड्रामा की भावी है। अब फिर मैं तुमको 21 जन्मों लिए वर्सा देता हूँ। तुम जानते हो, बाप का बनने से हम मनुष्य से देवता बनते हैं। एक तो वारिस बनते हैं, जिनको मातेले कहते हैं, दूसरे फिर हैं सौतेले, पवित्र नहीं बनते, सिर्फ बाबा–2 कहते हैं; परन्तु जीते जी मरते नहीं हैं। जो जीते जी मरते हैं वो हुए सगे, बाकी हैं लगे। यहाँ कोई विकारी आते हैं तो पूछा जाता है, जीते जी मरे हो? प्रतिज्ञा करते हो कि बाकी आयु पवित्र रहेंगे? तब बाबा कहते हैं– अच्छा, गोद में आओ। प्रतिज्ञा कर गोद में आवेंगे तो वर्सा मिलेगा, नहीं तो प्रजा में चले जावेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। शिवबाबा तो दाता है। तुम ऐसे मत समझो, हम शिवबाबा को देते हैं, नहीं, हम उनसे स्वर्ग की बादशाही का वर्सा लेते हैं। शिवबाबा को थोड़े ही मकान आदि बनाना है। वो तो तुम बच्चों के ही काम लगाते हैं। इसका भी (दादा) सब कुछ मैंने काम में लगाया ना, जिससे अबलाएँ माताएँ अपना जीवन सम्पन्न बना रही हैं। तुम भविष्य 21 जन्मों लिए अब कमाई कर रहे हो। लौकिक बाप का वर्सा मिलना बंद होने का है। स्वर्ग में जो तुमको लौकिक बाप से वर्सा मिलेगा सो यहाँ की कमाई है। एक कहानी है ना, बाप ने पूछा– तुम किसका हक खाते हो? तो बोला– अपना। यहाँ भी हरेक अपना

पुरुषार्थ कर, अपना हक लेते हैं। सबकी आत्माएँ हकदार हैं 21 जन्म लिए वर्सा पाने। अज्ञान काल में बाप से बच्ची को वर्सा नहीं मिलता है, सिर्फ बच्चे को मिलता है। यहाँ इस समय सब आत्माओं को वर्सा मिलना है– मेल हो या फिमेल। गाया भी जाता है कुमारी वो जो 21 कुल का उद्धार करे। ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ तुम हो। तुम जानते हो, हम भारत के सब मनुष्य मात्र को 21 जन्मों लिए वर्सा दिलाने पुरुषार्थ कराते हैं श्रीमत पर। हरेक को समझाओ, अभी लौकिक बाप से वर्सा मिलना बंद होता है, अभी पारलौकिक बाप से 21 जन्म का वर्सा मिलना है। कितनी जबरदस्त कमाई है। कितनी अच्छी बातें हैं समझने की। दिल भी होती है पुरुषार्थ करें; परन्तु माया फिर तूफान में लाय देती है। माया का तूफान लगने से दीवे बुझ जाते हैं। है बात बिल्कुल सहज। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यह है बुद्धि अथवा याद की यात्रा। हमको बाप को याद करना है, शरीर का भान छोड़ देना है। तुम गुरु लोग को याद करते हो ना। बहुत गुरु अपना चित्र बनवाय शिष्यों को दे देते हैं– गले में डाल दो। ऐसे बहुत हैं जो पति का चित्र भी निकाल, गुरु का चित्र डाल देते हैं। बाबा कहते हैं, यहाँ कोई चित्र डालने की कोई बात नहीं, सिर्फ बाप को याद करना है। छोटे–बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। अब स्वीट होम जाना है ज़रूर, तो क्यों न हम प्रतिज्ञा करें पवित्र रहने की और याद में रहें, तो विकर्म विनाश हो। कोई को भी दुख न देना चाहिए। सबसे बड़ा दुख है काम कटारी चलाना। यह है ही कंसपुरी। कृष्णपुरी में काम कटारी नहीं चलती, यहाँ काम कटारी चलती है; इसलिए इनको कंस–जरासिंधी पुरी कहा जाता है। बाकी कोई असुरों और देवताओं की वा पांडवों–कौरवों की लड़ाई लगी न है। लड़ाई है यादवों और कौरवों की। बच्चों ने सा० किया है, मक्खन हमको मिलता है, हम आकर राज–भाग्य करने वाले हैं। बच्चे कहते हैं– बाबा, इतना मकान क्यों बनाते हैं? अरे, एसलम लेने। इतने बच्चे सब आकर कहाँ रहेंगे! दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती जाती है। अभी तो टर्न बाई आते हैं तब पूरा होता है। प्रजापिता ब्रह्मा के तो बहुत बच्चे हो जावेंगे। शिवबाबा कहते हैं, मैं कितना बच्चों वाला हूँ, यह कोटों में कोई जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। समझते भी हैं, हम शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। फिर कब कौन–सा मुरझा जाते हैं। बच्चे जानते हैं, हम इस ब्रह्मा के द्वारा शिवबाबा की श्रीमत पर चलते हैं। बाप कहते हैं, यह इनका शरीर बहुत जन्मों के अंत के भी अंत का है। पुरानी दुनिया, पुराने तन में आया हूँ। अब मामेकम् याद करो, मैं गाइड बन आया हूँ। गॉड फादर को ही लिबरेटर कहा जाता। मनुष्य, मनुष्य को कह न सके। सारी दुनिया को लिबरेट करते हैं। इस समय सारी विश्व लंका है, शोक वाटिका है। भल धनवान लोग समझते हैं– हम स्वर्ग में हैं; परन्तु यह सब इतने में मिट्टी में मिल जावेंगे। खुद भी अमरीकी लोग लिखते हैं– हमें कोई विनाश के लिए प्रेर रहा है। बॉम्ब्स बनवा रहे हैं। कितना भारी खर्चा होता है! कलियुग पूरा हो सतयुग ज़रूर चाहिए। अब फिर से स्थापना होती है। बाबा वो ही राजयोग सिखाते हैं। तुम हो राजऋषि, वो है हठयोग ऋषि। राजयोगी सिवाय ब्राह्मणों के कोई कहलाय न सके। यह कहाँ लिखा हुआ थोड़े ही है कि राजयोगी ब्राह्मण थे। कृष्ण हो तो वो कैसे ब्राह्मणों को रचेंगे! ब्रह्मा हो तब तो मुखवंशावली ब्राह्मण बनें। यज्ञ ब्राह्मणों द्वारा रचा जाता है। बाबा कितना बड़ा सेठ है! कितनी बड़ी दक्षिणा मिलती है– स्वर्ग की राजाई की। यह है सबसे बेस्ट प्राइज़। ब्राह्मण ही फिर देवताएँ बनते हैं– चाहे सूर्यवंशी बनो, चाहे चंद्रवंशी बनो। बाबा कहते हैं, तुम पूछ सकते हैं– बाबा, अगर कल हमारा शरीर छूट जाए तो क्या पद पावेंगे? बाबा झट बता सकते हैं। अभी तो समय ही थोड़ा है। शरीर छूट जाए, फिर आए ज्ञान थोड़े ही ले सकेंगे। दो/तीन बरस का बच्चा क्या समझेगा। बच्चे भी समझते हैं, इस समय सब हैं अहिल्या, पत्थरबुद्धि। सबसे जास्ती है पत्थरबुद्धि साधु लोग, जो कहते हैं– ईश्वर सर्वव्यापी है। सब खेल खलास कर देते। कोई कहे ईश्वर की राह बताओ, कहेंगे– ईश्वर तो तेरे में, मेरे में है। कलियुगी गुरु तुमको डुबोते आए हैं। अब सतगुरु तुमको पार करते हैं। तुमको उस पार जाना है। कलियुग पूरा हो, सतयुग आना है। यह है विषय सागर। तुमको क्षीर सागर में ले चलते हैं। क्षीर सागर

में विष्णु का चित्र दिखाते हैं– लक्ष्मी पैर दबा रही है। सतयुग में लक्ष्मी कोई पैर नहीं दबाती। किस्म–2 के चित्र बना रखे हैं। घी की नदियाँ कहा जाता है ना! खीर से ही घी बनता है ना। बच्चों को सबको आए निमंत्रण देना है। हैविनली गॉड फादर हैविन का मालिक बनाते हैं। नर्क रावण बनाते हैं। सम्पत्ति को (दुख) नहीं कहा जाता। सम्पत्ति में तो सुख होता है। सन्यासी लोग सम्पत्ति से घृणा करते हैं। तुम कितने फिलैंथ्रोपिस्ट बनते हो– बाबा को अपना कखपन दे, 21 जन्म का वर्सा लेते हो। तुम जानते हो हम दर पर आए हैं सब कुछ लुटाने। बाबा भी कहते हैं, मैं भी तुमको स्वर्ग का वर्सा देता हूँ। ट्रुथ फॉर ट्रुथ कहते हैं ना। माया हड्डी का दाँत देती ..... बाबा सोने का दाँत देते। ऐसे नहीं, वहाँ कोई सोने के दाँत होंगे। यह है तुम्हारी बुद्धि की यात्रा। चार्ट रखो, सारे दिन में कितना समय याद किया। याद से ही ताकत आवेगी। जितना तुम्हारे में ताकत आवेगी उतना विनाश की तैयारी होती रहेगी, कनेक्शन है। अवस्था पक्की हो जावेगी। अब हमारे 84 जन्म पूरे हुए। बाबा कहते हैं, मुझे याद न करेंगे तो विकर्म विनाश न होंगे। ऐसे बाबा का फरमान मानना चाहिए ना! न मानेंगे तो फिर धर्मराज द्वारा डंडा खाना पड़ेगा। मैं वही गवर्मेन्ट हूँ। मेरा भी सुप्रीम जज है। परमधाम से तकलीफ लेकर पतित दुनिया, पतित शरीर में आता हूँ तुमको वापिस ले जाने। स्वर्ग की बादशाही तुम्हारी मुट्ठी में देता हूँ। मेरी मेहनत बरबाद करेंगे तो फिर धर्मराज द्वारा खाल उतरवाऊँगा। बाबा ने सा० भी कराया है। मोरध्वज, ताम्रध्वज की कथा भी है शास्त्रों में। बाप कहते हैं, मेरी मेहनत बरबाद न करना। तुम जानते हो, हमको यह पुराना शरीर छोड़ वापिस घर जाना है, फिर नया शरीर लेना है। सतयुग में फिर क्या कहेंगे– बूढ़ा शरीर हुआ तो जैसे सर्प खल बदल लेते हैं, ऐसे एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे, वापिस जाना है। ये बातें कोई शास्त्र में नहीं है। इस समय तुम्हारी जबरदस्त कमाई होती है। ईश्वर से ज़रूर जबरदस्त कमाई होगी ना! सबको बोलो, हमारे तीन बाप हैं। प्रजापिता भी तो मशहूर है। कृष्ण को प्रजापिता कहना राँग हो जाता है। गीता को राँग बना दिया है। अगर राँग न होती तो सब आकर शिव के आगे फूल आदि चढ़ाते। यह भी ड्रामा की भावी है। बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम डाल खण्डन कर दिया है। इसमें डरना न है। भल आकर पूछे। बड़े आदमी, बड़े आदमी को समझाएँगे तो बुद्धि में अच्छी रीति बैठेगा। आगे चलकर सन्यासी आदि भी कहेंगे, इन्हों को ज्ञान देने वाला प०पि०प० है, फिर तुम्हारे आगे (नमन) करेंगे। बाकी तीर आदि लगाने की बात नहीं। कितना अच्छी रीति समझाते हैं, फिर भी ऐसे मीठे बाप को भूल जाते हैं। मेहनत बिगर विश्व की बादशाही थोड़े ही मिलेगी। योग अक्षर खतम कर दो। बाप को याद करना कैसे भूल सकते! बाप को भूला तो वर्सा भी खतम हो जावेगा। बाबा कहते, मैं भी भूल जाता हूँ। अंत तक पुरुषार्थ करते रहना है। हमेशा समझो, हम शिवबाबा के भंडारे से खाते हैं, उनको तन–मन–धन सब दे दिया है। ऐसे याद करते रहें तो भी बहुत अच्छा है। यह है शिवबाबा को याद करने की युक्तियाँ। शिवबाबा से राय ले करने से फिर तुम्हारे ऊपर दोष न लगेगा। शिवबाबा कहेंगे, मेरे पैसे से कोई अकर्तव्य कार्य न करना, जो कोई पाप करने निमित्त बने। सब सेन्टर्स शिवबाबा के हैं। ऐसे नहीं, हमने स्थापन किया है। मेरा–2 न करना है। शिवबाबा पर बलि चढ़ते हैं। अगर मेरा कहेंगे तो बलि फिर किस पर चढ़ें? शिवबाबा का सेन्टर है, उनको सब कुछ दे दिया है। बाबा कहते, यह सब तुम्हारे काम में लगाता हूँ। सबके रहने लिए मकान बनाया है। मैं भी आता जाता हूँ। यह बाबा का लॉग बूट है, सो भी पुराना। जूता लेते हैं, जूती नहीं। हाँ, कब कोई में आकर दृष्टि दे सकता हूँ; परन्तु ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी हूँ। किसके कल्याण अर्थ उसमें प्रवेश कर मदद कर देता हूँ। बच्चे खुद भी समझते हैं, आज पता नहीं किसने मुरली चलाई। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का ब्रह्मावंशी स्वदर्शनचक्रधारी ब्राह्मण कुल भूषण बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।